Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 5064093

Roll No. 23262000010
Total Mark 72/75.00

Exam BACHELOR OF ARTS_DEC-2023
Subject A320101T - INTRODUCTION TO INDIAN MUSIC

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	5/5						
1B	5/5						
1C	5/5						
1D	5/5						
1E	4/5						
1F	5/5						
1G	5/5						
1H	5/5						
1I	5/5						
2	NA/15						
3	NA/15						
4	14/15						
5	NA/15						
6	NA/15						
7	NA/15						
8	14/15						
9	NA/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

Date of Exam: 26/12/23 Shift: First Room No.: Hall
Paper Code: A320101T Subject: Music (Vocal) Year/Sem: I
Name of Candidate: Nitya Rastogi
Roll No.: 2 3 2 6 2 0 0 0 0 1 0

Signature of Candidate: Nitya Rastogi | Signature of Invigilator | COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks
Total Marks in Words

A 3 2 0 1 0 1 T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: Introduction of Indian Music
Session: 2023 Year/Semester: First
Subject Name: Music (Vocal)
Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code
A 3 2 0 1 0 1 T

Exam Date
2 6 1 2 2 0 2 3

Name of Candidate
NITYA RASTOGI

Father's Name
SANJEEV RASTOGI

महाविद्यालय का कोड
College Code
F B 0 7

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code
F B 0 7

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
संस्थागत Regular ● भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex-Student ○
व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
5064093

A 3 2 0 1 0 1 T
Paper Code

नामांकन संख्या
Enrollement Number: C S J M A 2 3 0 0 0 1 1 6 3 1 8

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number
2 3 2 6 2 0 0 0 0 1 0

पेपर कोड Paper Code
A 3 2 0 1 0 1 T

Signature of Candidate: Nitya Rastogi

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें। 2. कोष्ठक में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken the circles completely.

Correct Method	Incorrect Method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ◎

4. Make no Stray marks on this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्धारित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक या सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों को दिशा निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या कटे हुए है, तो शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके [illegible] होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई [illegible] नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES [of] commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that [no] corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in [status] as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code

Section : A

प्र०1 राग यमन का वादी - संवादी स्वर क्या है ?
उ० राग यमन का वादी स्वर - गन्धार (ग) स्वर तथा संवादी स्वर - निषाद (नि) स्वर होता है।

→ दोहा → "सबही तीवर सुर जहाँ, वादि गन्धार सुहाय।
अरू निखादते संवादी, ईमन राग कहाय॥"

→ राग - परिचय → राग यमन को ईमन, यमन, कल्याण तथा एमन नाम से भी जानते है। यह राग पूर्वांग प्रधान राग है। इस राग की प्रकृति साधारण है।

- थाट → कल्याण
- स्वर → मध्यम (मं) तीव्र
- जाति → सम्पूर्ण
- वर्ज्य स्वर → कोई नही
- वादी → गन्धार
- संवादी → निषाद
- गायन समय → रात्रि का प्रथम पहर

→ आरोह → ऩि, रे, ग, मं, प, ध, नि, सां।

→ अवरोह → सां, नि, ध, प, मं, ग, रे, सा।

→ पकड़ → ऩि रे ग, ऩि रे सा, प मं ग, ऩि रे सा।

- अपने थाट का मुख्य राग होने के कारण इसे आश्रय राग कहा जाता है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

प्र०2 आन्दोलन किसे कहते है?
उ० किसी भी राग के स्वर पर अधिक देर तक ठहराव या आन्दोलित होना आन्दोलन कहलाता है।

किसी भी तार को छेड़ने से कम्पन होता है, कम्पन से बार-बार आवृति होती है। किसी भी वाद्य यन्त्र के तार को जितनी तेजी से छेड़ेंगे आन्दोलन उतनी ही ऊंची तथा कम्पन उतना अधिक होगा तथा आवृत्ति उतनी ही बार-बार होगी। परन्तु आन्दोलन कम तब होगा जब तार को धीमे या हल्के से छेड़ेंगे तो कम्पन उतना कम और आवृत्ति उतनी ही कम बार होगी।

यद्यपि किसी भी स्वर की आन्दोलन संख्या निम्न होती है।

जैसे -

षड्ज (सा) की आन्दोलन संख्या - 260 "

प्र०3 श्रुतियों की संख्या कितनी होती है?
उ० "श्रुति वह है, जिसे हम अपने कानों से सुन सके तथा जो चित्त को प्रसन्न करें तथा जो संगीतोपयोगी हो, श्रुति कहलाती है।"

⇒ कई विद्वान श्रुति की परिभाषा मानते हुए कहते है कि

"श्रूयते इति श्रुति।"

अर्थात् जो कानों से सुनी जा सके, वही श्रुति है।

परन्तु यह परिभाषा अस्पष्ट है तथा अपूर्ण भी। क्योंकि हम अपने कानों से तो ध्वनि भी सुनते हैं, कोलाहल भी, परन्तु सब कुछ श्रुति तो नहीं।

⇒ आधुनिक विचारधारा के अनुसार, "श्रुति वह जो सुनी जाए, स्पष्ट समझी जाए तथा जिससे चित्त प्रसन्न हो तथा सुख की अनुभूति हो।"

* श्रुति ⇒ साधारणतया श्रुति 22 मानी जाती है तथा स्वरों से ही श्रुति की उत्पत्ति होती है। माना स्वर 12 होते हैं, परन्तु उनमें श्रुति उत्पन्न करने की क्षमता होती है।

⇒ 22 श्रुतियों के नाम

क्र०	नाम	क्र०	नाम	क्र०	नाम
1	तीव्रा	10	वज्रिका	1[illegible]	[illegible]रिणी
2	कुमुदती	11	प्रसारिणी		उग्रा
3	मन्दा	12	प्रीति	21	रम्या
4	छन्दोवती	13	मार्जनी	22	क्षोभिणी
5	दयावती	14	क्षिति		
6	रंजिका	15	रक्ता		
7	रंजनी	16	संदीपनी		
8	रौद्री	17	आलापिनी		
9	क्रोधा	18	मदन्ती		

Paper Code

प्र०4 नि, सा, म, म, ध, नि, सां किस राग का आरोह है?

उ० यह आरोह नि, सा, ग, म, ध, नि, सां राग मालकोंस का है।

⇒ दोहा ⇒

"कोमल सब पंचम ऋषभ, दोऊ वर्जित कीन्ह।
सा, म वादी-संवादी से, मालकोंस को चीन्ह॥"

⇒ राग-परिचय ⇒

राग मालकोंस को मालकंस, मालकोश तथा मालकौंश के नाम से भी जाना जाता है। यह राग उत्तरांग प्रधान राग है। इस राग की प्रकृति गम्भीर है।

- थाट ⇒ भैरवी
- स्वर ⇒ ग, ध, नि कोमल
- जाति ⇒ औडुव
- वर्ज्य स्वर ⇒ रे, प

[illegible]दी ⇒ म
संवादी ⇒ सा

- आरोह ⇒
  नि, सा, ग, म, ध, नि, सां।
- अवरोह ⇒
  सां, नि, ध, म, ग, म, ग, सा।
- पकड़ ⇒
  नि, सा, ग, म, ध, नि, ध, म, ग, म, ध, नि, सां।

⇒ इस राग का समप्रकृति राग ⇒ राग चंद्रकोश है।

प्र०5 वादी - संवादी की परिभाषा लिखिए।
उ०

1) वादी स्वर

"जिस स्वर का प्रयोग राग में सबसे अधिक मात्रा में किया जाता है या जिस स्वर का प्रयोग अधिक परिमाण में मिलता है, वह राग का <u>वादी स्वर</u> कहलाता है।"

राग का वादी स्वर पूर्वांगवादी या उत्तरांगवादी कोई भी हो सकता है।

वादी स्वर की विशेषता

- किसी भी राग में वादी स्वर केवल एक ही होता है।
- राग में वादी स्वर की अनिवार्यता होती है।
- राग के वादी स्वर से राग की पहचान होती है।
- किसी भी राग में ठहराव वादी स्वर पर ही लिया जाता है।
- वादी स्वर को <u>राजा</u> की उपमा दी गयी है।

2) संवादी स्वर

"जिस स्वर का प्रयोग राग में अन्य सभी स्वरों से अधिक तथा वादी स्वर से कम मिलता है तथा जिस स्वर का परिमाण राग के अन्य स्वरों से अधिक किन्तु वादी स्वर से कम पाया जाता है, राग का <u>संवादी स्वर</u> कहलाता है।"

P.T.O.

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

संवादी स्वर की विशेषता

- संवादी स्वर भी राग में केवल एक ही पाया जाता है।
- संवादी स्वर की भी अनिवार्यता निश्चित है।
- यदि स्वर का वादी स्वर म या ग है तो संवादी स्वर निश्चित रूप से सा या नि ही होगा।
- राग में संवादी स्वर वादी स्वर के पांच या चार स्वरों को छोड़कर आता है।
- संवादी स्वर को 'मन्त्री' की उपमा दी गयी है क्योंकि किसी भी राज्य में राजा के बाद मन्त्री ही प्रधान होता है।

प्र० स्थायी वर्ण से आप क्या समझते हैं?

उ० **वर्ण** ⇒ "गान करते समय स्वरों के ऊपर-नीचे जाने की क्रिया को वर्ण कहते हैं।"

⇒ संगीत विद्वानों के अनुसार, "किसी भी वर्ण से शब्द, शब्द से वाक्य तथा वाक्य से जगत् के व्यवहार की व्याख्या होती है। अर्थात् इन सभी का मूल तत्व वर्ण है।

⇒ **वर्ण के प्रकार** ⇒ वर्ण चार प्रकार के होते हैं-

1) स्थायी वर्ण
2) आरोही वर्ण
3) अवरोही वर्ण
4) संचारी वर्ण

- **स्थायी वर्ण** ⇒

स्थायी वर्ण, वह वर्ण समूह या स्वर समूह है, जो एक ही स्वर पर ठहराव करके उस स्वर को बार-बार प्रयोग में लेता है, तथा जिसकी लय समान रहती है।

⇒ **स्थायी वर्ण का उदाहरण** ⇒

1) सारेगग, रेगमम, गमपप, मपधध, पधनिनि।
2) सारेगग, रेगरेमम, सा रे सा ग म गग आदि।

प्र०7) "षड्ज ग्राम" की कितनी मूर्च्छनाएँ होती हैं?

उ० "षड्ज ग्राम वह है, जिसका स्वर मुख्य रूप से सा (षड्ज) स्वर से प्रारम्भ होकर सा स्वर पर ही समाप्त होता है।"

- षड्ज ग्राम में मुख्य रूप से सात मूर्च्छनाएँ होती हैं —

षड्ज ग्राम: मूर्च्छना का स्वर वि[illegible]जन

1. उत्तरमन्द्रा - सा, रे, ग, [illegible], ध, नि।
2. रजनी - नि़, सा, रे, ग, [illegible], प, ध।
3. उत्तरायता - ध़, नि़, सा, रे, ग, म, प।
4. शुद्धषड्जा - प़, ध़, नि़, सा, रे, ग, म।
5. मत्सरीकृता - म़, प़, ध़, नि़, सा, रे, ग।
6. अश्वक्रान्ता - ग़, म़, प़, ध़, नि़, सा, रे।
7. अभिरुद्गता - रे़ ग़ म़ प़, ध़, नि़ सा।

Paper Code

8

Q08 धा गे न ति | न क धि न , किस ताल का ठेका है ? नाम लिखिए |

उत्तर यह बोल धा गे न ति | न क धि न - ताल - कहरवा ताल के बोल हैं |

ताल - कहरवा ताल

ताल - परिचय =

मात्रा = 8 मात्राएँ
विभाग = 2 (प्रत्येक मे 4-4)
ताली = 1 (सम पर)
खाली = 1 (पाँचवी मात्रा पर)

कहरवा ताल आठ मात्राओं की छोटी व सरल ताल है | यह ताल तबले की ताल है तथा बन्द बोलो द्वारा बजायी जाती है | इसताल में मुख्य रूप से लग्गी, लड़ आदि बजायी जाती है | गजल, भजन आदि भी इस ताल मे गायी जाती है | इस ताल की प्रकृति चंचल है |

कहरवा ताल में पहली मात्रा पर सम की ताली तथा पाँचवी मात्रा पर खाली होती है | इसमे दो विभाग होते हैं | प्रथम विभाग मे तथा दूसरे विभाग मे चार-चार मात्राएँ होती हैं |

कहरवा ताल का ठेका

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	
बोल	धा	गे	न	ति	न	क	धि	न	धा
चिन्ह	X				0				X

प्र०9 पं० व्यंकटमुखी ने कितने थाटों को माना है ?

उ० पं० व्यंकटमुखी जी दक्षिण भारत के प्रमुख तथा प्रख्यात संगीतज्ञ है। इन्होंने दक्षिण भारत (कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु) आदि में कुछ थाट माने है, जो वही प्रचलित है, ये थाट कुछ कठिन प्रतीत होते है।

→ 72 थाट व्यंकटमुखी जी के द्वारा रचित →

पं० व्यंकटमुखी जी ने 72 थाटों को माना है तथा मुख्यतः प्रदान की है।

पं० व्यंकटमुखी जी के द्वारा रचित 72 थाटों में से कुछ थाट यहाँ वर्णित है —

- तरंगिनी
- गंगातरंगिनी
- भैरवी
- तोडी
- भवानी

———— x ————

P. T. O

For Section B & C

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

10

Section : B

प्र० अपने पाठ्यक्रम के किसी ताल का परिचय, ठेका व दुगुन सहित लिखिए।

उ०

ताल : एकताल

ताल - परिचय →

मात्रा → 12 मात्राएँ
विभाग → 6 विभाग
ताली → 4 (1, 5, 9, 11 वीं मात्रा)
खाली → 2 (3, 7 वीं मात्रा)

→ एकताल को इकताल के नाम से भी जाना जाता है। यह ताल तबले की प्रमुख ताल है तथा बन्द बोलों द्वारा बजायी जाती है। इस ताल में मुख्य रूप से ख्याल, ध्रुपद आदि गाया जाता है। पेशकार, कायदा, टुकड़ा, परन आदि भी इसताल में बजाया जाता है।

→ यह ताल गम्भीर प्रकृति की ताल है। इस ताल के बोलो में समान वजन न होने के कारण यह बजाने, गाने तथा प्रयोग करने मे कठिन प्रतीत होती है।

→ यह ताल मुख्य रूप से विलम्बित मध्य लय में प्रयोग की जाती है। परन्तु कुछ विद्वान इस ताल में तराना भी बजाते है, इसलिए इसताल का प्रयोग द्रुत लय में भी किया जाता है।

→ एकताल 12 मात्राओं की ताल है। एकताल में छः विभाग होते है, प्रत्येक

Paper Code

11

विभाग में दो-दो मात्राएँ होती है। पहली मात्रा पर सम, पांचवी, नवीं व ग्यारहवीं मात्रा पर ताली तथा सातवीं व तीसरी मात्रा पर खाली होता है। यह ताल कठिन ताल है तथा कम प्रयोग में ली जाती है।

एकताल का ठेका

ठाह लय में

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल	धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धागे	तिरकिट	धी	ना
चिन्ह	x		0		2		0		3		4	

दुगुन लय में

मात्रा	1	2	3	4	5	6
बोल	धिंधिं	धागेतिरकिट	तूना	कत्ता	धागेतिरकिट	धीना
चिन्ह	x		0		2	
मात्रा	7	8	9	10	11	12
बोल	धिंधिं	धागेतिरकिट	तूना	कत्ता	धागेतिरकिट	धीना
चिन्ह	0		3		4	

P.T.O

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Section : C

प्र० अपने पाठ्यक्रम के किसी एक राग का सम्पूर्ण परिचय आरोह, अवरोह एवं पकड़ सहित लिखिए?

उ०

राग - यमन

→ दोहा → "सबही तीवर सुर जहाँ, वादि गन्धार सुहाय।
अरू निखादते संवादि, ईमन राग कहाय॥"

→ दोहे का अर्थ → जिस राग में सभी स्वर तीव्र, वादी स्वर गन्धार शोभा देता है तथा संवादी स्वर निषाद होता है, यमन राग कहलाता है।

→ राग - परिचय → राग यमन को ईमन, यमन, कल्याण तथा एमन नाम से भी जाना जाता है।

- थाट → कल्याण थाट
- स्वर → मं (मध्यम) स्वर तीव्र
- जाति → सम्पूर्ण - सम्पूर्ण
- वर्जित स्वर → कोई नहीं
- वादी → गन्धार
- संवादी → निषाद
- गायन समय → रात्रि का प्रथम पहर

Paper Code

13

राग का आरोह

ऩि, रे, ग, मं, प, ध, नि, सां।

राग का अवरोह

सां, नि, ध, प, मं, ग, रे, सा।

राग की पकड़

ऩि रे ग, ऩि रे सा, प मं ग, ऩि रे सा।

राग की विशेषताएँ :

- यमन राग का प्राचीन नाम कल्याण था। इस राग का प्रचलन अमीर खुसरो जी के द्वारा किया गया था।
- अपने थाट का मुख्य राग होने के कारण इसे आश्रय राग भी कहा जाता है।
- यमन तथा कल्याण राग इन दोनो को यदि मिला दिया जाए तो एक नवीन राग की उत्पत्ति होती है। इस नवीन राग को यमन-कल्याण नामक राग से जाना जाता है। यमन-कल्याण राग मे दोनों मध्यम (म) प्रयोग किए जाते है।
- कल्याण कई प्रकार के होते है - शुद्ध कल्याण

P. T. O

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

- धुरिया।
- जैत कल्याण।

- भूपाली, शुद्ध कल्याण व यमन कल्याण राग यमन के समप्रकृति राग कहे जाते हैं।

- यह पूर्वांग प्रधान राग है। इस राग को गायन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर अर्थात् रात्रि 7 बजे से 10 बजे तक का है।

- इस राग का चलन सीधा है। यह राग तीनो सप्तकों के स्वरों में प्रयोग किया जाता है।

- इस राग में सा, म, प पर अधिक ठहराव होता है तथा आकार करते समय इन्ही स्वरों पर आ-आ कर रूक जाते हैं, इन्हें राग के न्यास के स्वर भी कहते है।

- इस राग की प्रकृति गम्भीर है।

- इस राग में कई फिल्मी गानें भी गाए गए हैं –

(i) पृथ्वीराज से → चन्दन सा बदन, चंचल चितवन

(ii) राम लखन से – बड़ा दुख दीन्हा, तेरे लखन।

(iii) चित्तचोर से – जब दीप जले आना।

———x———

Paper Code

15

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

19

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion